



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 415]
No. 415]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, सितम्बर 13, 2007/भाद्र 22, 1929
NEW DELHI, THURSDAY, SEPTEMBER 13, 2007/BHADRA 22, 1929

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 13 सितम्बर, 2007

सं. 95/2007-सीमा शुल्क (नै.टै.)

सा.का.नि. 593(अ).—केन्द्रीय सरकार, सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 14 के साथ पठित धारा 156 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्वारा, निम्नलिखित नियम बनाती है, यथा :—

1. संक्षिप्त शीर्ष, प्रारंभ तथा विनियोग.—(1) इन नियमों को सीमा शुल्क मूल्यांकन (निर्यात किए जाने वाले माल का मूल्य निर्धारण) नियम, 2007 कहा जाए।

(2) ये 10 अक्टूबर, 2007 को प्रवृत्त होंगे।

(3) ये केवल निर्यात के लिए माल पर लागू होंगे।

2. परिभाषा.—(1) इन नियमों में, जब तक कि परिस्थितिवश अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(क) “सदृश किस्म तथा गुणवत्ता वाले माल” का अर्थ है उसी व्यक्ति अथवा किसी और व्यक्ति द्वारा निर्मित वह निर्यात हेतु माल, जिसकी वास्तविक विशेषताएं, गुणवत्ता तथा ख्याति मूल्यांकन माल के समरूप अथवा समान हो, तथा जो समान कार्य करता हो अथवा जो मूल्यांकित माल से वाणिज्यिक रूप से अदले-बदले जा सकते हों, और

(ख) “लेन-देन मूल्य” का अर्थ है सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 14 की उप-धारा (1) में दिए गए अर्थ के अनुसार निर्यात हेतु माल का मूल्य।

(2) इन नियमों के अंतर्गत, व्यक्तियों को केवल तभी “संबंधित” माना जाएगा, जब—

(i) वे एक दूसरे के व्यापार में अधिकारी अथवा निदेशक हों;

(ii) वे व्यापार में कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त साझेदार हों;

(iii) वे नियोक्ता एवं कर्मचारी हों;

(iv) उनमें से कोई एक व्यक्ति दोनों के अशोधित वॉटिंग स्टॉक अथवा शेयर में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से पांच प्रतिशत या अधिक का स्वामित्व रखते हों, नियंत्रक अथवा धारक हों।

(v) दोनों में से कोई एक, दूसरे का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से नियंत्रित करता हो;

(vi) कोई तीसरा व्यक्ति दोनों को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से नियंत्रित करता हो;

(vii) दोनों मिलकर किसी तीसरे व्यक्ति को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से नियंत्रित करते हों; अथवा

(viii) वे एक ही परिवार के सदस्य हों।

व्याख्या I—“व्यक्ति” शब्द में विधिक व्यक्ति भी शामिल हैं।

व्याख्या II—वे व्यक्ति, जो एक दूसरे के व्यापार से जुड़े हों जैसे कि कोई एक व्यक्ति दूसरे का एक मात्र एजेंट अथवा एकमात्र वितरक अथवा एक मात्र रियायत पाने वाला हो, चाहे किसी भी रूप में वर्णित हों, का इन नियमों के अंतर्गत संबंधित माना जाएगा, यदि वे इस उप-नियम के मानदण्ड के दायरे के अंतर्गत आते हैं।

3. **मूल्यांकन प्रणाली का निर्धारण.**—(1) नियम 8 के अधीन लेन-देन मूल्य ही निर्यात हेतु माल का मूल्य होगा।

(2) जहां क्रेता और विक्रेता संबंधित हों वहां भी लेन-देन मूल्य ही माना जाएगा, बशर्ते कि, उनके आपसी संबंध का असर मूल्य पर न पड़ा हो।

(3) यदि उप-नियम (1) और उप-नियम (2) के प्रावधानों के अंतर्गत मूल्य निर्धारित नहीं किया जा सकता है, तो नियम 4 से 6 के क्रम अनुसार बढ़ते हुए मूल्य निर्धारित किया जाएगा।

4. **तुलना द्वारा निर्यात मूल्य का निर्धारण.**—(1) निर्यात हेतु माल का मूल्य, समान प्रकार व गुणवत्ता वाले माल जो उसी अवधि अथवा लगभग उसी अवधि-के दौरान उसी गंतव्य देश में आयातित किया गया हो के लेन-देन मूल्य पर आधारित होगा या ऐसा न होने की स्थिति में उप-नियम (2) के प्रावधानों के अनुसार किसी अन्य गंतव्य देश में आयातित माल के अनुसार समायोजित किया जाएगा।

(2) उप-नियम (1) के अंतर्गत निर्यात हेतु माल का मूल्य निर्धारित करते समय उचित अधिकारी निम्नलिखित सहित सभी संबंध कारकों को ध्यान में रखते हुए ऐसे समंजन कर सकता है जो उसे उचित प्रतीत होते हैं।

- (i) निर्यात की तिथियों में अन्तर,
- (ii) वाणिज्यिक स्तरों तथा मात्रा में अन्तर,
- (iii) मूल्यांकित किए जाने वाले माल की जिस माल के साथ उसकी तुलना की जा रही है, उनके संघटनों, गुणवत्ता तथा डिजाइन में अन्तर।
- (iv) निर्यात के स्थान के अनुसार घरेलू माल भाड़ा तथा बीमा प्रभार में अन्तर।

5. **परिकलित मूल्य प्रणाली.**—यदि नियम 4 के तहत मूल्य निर्धारित नहीं किया जा सकता है, तो यह परिकलित मूल्य पर आधारित होगा, जिसके लिए निम्नलिखित को ध्यान में रखा जाएगा :

- (क) निर्यात हेतु माल के उत्पाद विनिर्माण अथवा प्रसंस्करण पर लागत;
- (ख) डिजाइन अथवा ब्रांड, यदि कोई है, हेतु प्रभाग;
- (ग) लाभ के लिए एक राशि।

6. **अवशिष्ट प्रणाली.**—जहां निर्यात हेतु माल का मूल्य नियम 4 व 5 के प्रावधानों के अंतर्गत यह निर्धारित नहीं किया जा सकता है, वहां नियम 3 के प्रावधानों के अधीन, मूल्य का निर्धारण इन नियमों के सिद्धान्तों तथा सामान्य प्रावधानों के अनुकूल यथोचित तरीके से किया जाएगा, बशर्ते कि, निर्यात हेतु माल के मूल्य निर्धारण के लिए केवल उसके स्थानीय बाजार दर को आधार नहीं बनाया जा रहा हो।

7. **निर्यातक द्वारा घोषणा.**—निर्यातक को निर्यात माल के मूल्य के संबंध में इसके लिए विनिर्दिष्ट तरीके से एक घोषणा प्रस्तुत करनी होगी।

8. **घोषित मूल्य की नामंजूरी.**—(1) यदि उचित अधिकारी को निर्यात हेतु किसी भी माल के मूल्य के संबंध में की गयी घोषणा की सत्यता अथवा विशुद्धता के सम्बन्ध में आशंका का कोई भी कारण हो तो वह माल के निर्यातक को ऐसे माल के संबंध में दस्तावेज या अन्य कोई सबूत सहित और जानकारी देने को कह सकता है, और यदि और जानकारी प्राप्त करने पर ऐसे निर्यातक से जवाब न मिलने पर भी उचित अधिकारी को घोषित किए गए मूल्य की सत्यता व विशुद्धता के संबंध में पर्याप्त संदेह है तो यह माना जाएगा कि लेन-देन मूल्य नियम 3 के उप-नियम (1) के अनुसार निर्धारित नहीं किया गया है।

(2) निर्यातक के अनुरोध किए जाने पर उचित अधिकारी ऐसे निर्यातक को निर्यात हेतु माल के मूल्य के संबंध में की गई घोषणा की सत्यता अथवा विशुद्धता पर संदेह करने के कारणों को लिखित रूप से सूचित करेगा और उप-नियम (1) के अंतर्गत अंतिम निर्णय लेने से पहले उसे सुनवाई का एक उचित मौका देगा।

व्याख्या (1).—संदेह दूर करने के लिए, यह घोषित किया जाता है कि—

- (i) इस नियम के तहत मूल्य निर्धारित करने की प्रणाली नहीं दी गई है; तथापि उन मामलों में जहां यह पर्याप्त संदेह है कि घोषित किया गया मूल्य सही लेन-देन मूल्य प्रस्तुत नहीं कर रहा है, इस नियम के तहत घोषित मूल्य को अस्वीकार करने की प्रक्रिया तथा प्रणाली दी गई है; उन मामलों में जहां घोषित मूल्य अस्वीकार किया गया है वहां नियम 4 से 6 के क्रमानुसार चलते हुए मूल्य का निर्धारण किया जाएगा।
- (ii) घोषित मूल्य वहां स्वीकार किया जाएगा जहां उचित अधिकारी को निर्यातक से पूछताछ के बाद घोषित मूल्य की सत्यता तथा विशुद्धता के संबंध में संतोष हो जाए।
- (iii) उचित अधिकारी का निम्नलिखित सहित विशिष्ट कारणों के आधार पर घोषित मूल्य के संबंध में संदेह करने का अधिकार होगा।
- (क) तुलनात्मक व्यापारिक लेन-देन में तुलनात्मक मात्रा में उसी अवधि अथवा लगभग उसी अवधि में समान प्रकार तथा गुणवत्ता वाले माल के मूल्य में काफी अन्तर पाए जाने पर।
- (ख) यदि निर्यात के समय समान प्रकार व गुणवत्ता वाले माल के बाजार मूल्य की तुलना में मूल्य काफी अधिक पाया जाए।
- (ग) माल के विवरण, गुणवत्ता, मात्रा, निर्माण अथवा उत्पादन के वर्ष आदि मानदंडों के बारे में गलत घोषणा किए जाने पर।

MINISTRY OF FINANCE**(Department of Revenue)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 13th September, 2007

No. 95/2007-Customs (N.T.)

G.S.R. 593 (E).—In exercise of the powers conferred by Section 156 read with Section 14 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962) the Central Government hereby makes the following rules, namely,—

1. Short title, commencement and application.—

(1) These rules may be called the Customs Valuation (Determination of Value of Export Goods) Rules, 2007.

(2) They shall come into force on the 10th day of October, 2007.

(3) They shall apply to the export goods.

2. Definitions.—(1) In these rules, unless the context otherwise requires,—

(a) “goods of like kind and quality” means export goods which are identical or similar in physical characteristics, quality and reputation as the goods being valued, and perform the same functions or are commercially interchangeable with the goods being valued, produced by the same person or a different person; and

(b) “transaction value” means the value of export goods within the meaning of sub-section (1) of Section 14 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962).

(2) For the purposes of these rules, persons shall be deemed to be “related” only if—

- (i) they are officers or directors of one another's businesses;
- (ii) they are legally recognised partners in business;
- (iii) they are employer and employee;
- (iv) any person directly or indirectly owns, controls or holds five per cent or more of the outstanding voting stock or shares of both of them;
- (v) one of them directly or indirectly controls the other;
- (vi) both of them are directly or indirectly controlled by a third person;
- (vii) together they directly or indirectly control a third person; or
- (viii) they are members of the same family.

Explanation I.—The term “person” also includes legal persons.

Explanation II.—Persons who are associated in the business of one another in that one is the sole agent or sole distributor or sole concessionaire, howsoever described, of the other shall be deemed to be related for the purpose of these rules, if they fall within the criteria of this Sub-rule.

3. Determination of the method of valuation.—(1)

Subject to rule 8, the value of export goods shall be the transaction value.

(2) The transaction value shall be accepted even where the buyer and seller are related, provided that the relationship has not influenced the price.

(3) If the value cannot be determined under the provisions of sub-rule (1) and sub-rule (2), the value shall be determined by proceeding sequentially through rules 4 to 6.

4. Determination of export value by comparison.—

(1) The value of the export goods shall be based on the transaction value of goods of like kind and quality exported at or about the same time to other buyers in the same destination country of importation or in its absence another destination country of importation adjusted in accordance with the provisions of sub-rule (2).

(2) In determining the value of export goods under sub-rule (1), the proper officer shall make such adjustments as appear to him reasonable, taking into consideration the relevant factors, including—

- (i) difference in the dates of exportation;
- (ii) difference in commercial levels and quantity levels;
- (iii) difference in composition, quality and design between the goods to be assessed and the goods with which they are being compared;
- (iv) difference in domestic freight and insurance charges depending on the place of exportation.

5. Computed value method.—If the value cannot be determined under rule 4, it shall be based on a computed value, which shall include the following :—

- (a) cost of production, manufacture or processing of export goods;
- (b) charges, if any, for the design or brand;
- (c) an amount towards profit.

6. Residual method.—(1) Subject to the provisions of rule 3, where the value of the export goods cannot be determined under the provisions of rules 4 and 5, the value shall be determined using reasonable means consistent with the principles and general provisions of these rules provided that local market price of the export goods may not be the only basis for determining the value of export goods.

7. Declaration by the exporter.—The exporter shall furnish a declaration relating to the value of export goods in the manner specified in this behalf.

8. Rejection of declared value.—(1) When the proper officer has reason to doubt the truth or accuracy of the value declared in relation to any export goods, he may ask the exporter of such goods to furnish further information including documents or other evidence and if,

after receiving such further information, or in the absence of a response of such exporter, the proper officer still has reasonable doubt about the truth or accuracy of the value so declared, the transaction value shall be deemed to have not been determined in accordance with sub-rule (1) of rule 3.

(2) At the request of an exporter, the proper officer shall intimate the exporter in writing the ground for doubting the truth or accuracy of the value declared in relation to the export goods by such exporter and provide a reasonable opportunity of being heard, before taking a final decision under sub-rule (1).

Explanation.—(1) For the removal of doubts, it is hereby declared that—

(i) This rule by itself does not provide a method for determination of value, it provides a mechanism and procedure for rejection of declared value in cases where there is reasonable doubt that the declared value does not represent the transaction value; where the declared value is rejected, the value shall be determined by proceeding sequentially in accordance with rules 4 to 6.

(ii) The declared value shall be accepted where the proper officer is satisfied about the truth or accuracy of the declared value after the said enquiry in consultation with the exporter.

(iii) The proper officer shall have the powers to raise doubts on the declared value based on certain reasons which may include—

(a) the significant variation in value at which goods of like kind and quality exported at or about the same time in comparable quantities in a comparable commercial transaction were assessed.

(b) the significantly higher value compared to the market value of goods of like kind and quality at the time of export.

(c) the misdeclaration of goods in parameters such as description, quality, quantity, year of manufacture or production.

[F.No. 467/35/2007-Cus.-V]

ASEEM KUMAR, Under Secy.